# ओ३म्

## दर्शनशास्त्र विभाग

## Department of Philosophy

## गुरुकुल काङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

## Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar, UK. Bharat (India)

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) वर्ष 2020 पर आधृत
## चतुर्वर्षीय स्नातक (ऑनर्स/विद्यालंकार)
## दर्शनशास्त्र पाठ्यक्रम

**Undergraduate (B.A. - Honours/Vidyalankar), Four Year's Course for Philosophy under**
**National Education Policy (NEP) - 2020**

# शैक्षणिक सत्र - 2022-23 से प्रभावी

**Implemented from Academic Session - 2022-23**

# पाठ्यक्रम का उद्देश्य

## (Programme Objectives)

भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय के निर्देशों के अनुसार गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय) का स्नातक स्तरीय (B.A. Hons) दर्शनशास्त्र विषय का पाठ्यक्रम NEP - 2020 के अनुरूप संरचित है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को दर्शनशास्त्र में विद्यमान् विविध दार्शनिक तत्त्वों का सम्यक् बोध कराना है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु पाठ्यक्रम में भारतीय व पाश्चात्त्य दर्शन में वर्णित ज्ञानमीमांसीय, तत्त्वमीमांसीय, नीतिशास्त्रीय व तर्कशास्त्रीय विषयों को सम्मिलित किया गया है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में जीवन को उसकी समग्रता में देखने का एक दार्शनिक कौशल विकसित होगा तथा उनमें बौद्धिक, तार्किक, भावनात्मक बुद्धि, नैतिक व यथेष्ट आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का परिमार्जन होगा। विद्यार्थी सामाजिक जीवन के लिए उपयोगी न्याय, स्वतन्त्रता, जीवन के मौलिक अधिकार, कर्त्तव्य व सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्थाओं के दार्शनिक अवधारणाओं को समझने, उनका निर्माण एवं उनका अनुपालन करने में कुशल होंगे। यह कुशलता व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को अवश्य ही उन्नत बनाने में सहायक होगी। प्रस्तुत पाठ्यक्रम का ध्येय विद्यार्थियों में इसी दार्शनिक कुशलता को विकसित करना है।

Four Year Bachelor of Arts (Hons) in Philosophy,

Faculty of Humanities/Oriental Studies, Gurukula Kangri (DU) Haridwar.

| सत्र Sem. | Discipline Specific Core (DSC) | Discipline Specific Elective (DSE) | Generic Elective (GE) | Ability Enhancement Compulsory Courses (AECC) | Skill Enhancement Courses (SEC) | Value Addition Courses (VAC)/ Industrial Training/Survey and Field work/research Project/ Dissertation | Total Credits |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| I | HPI-C101<br>प्राचीन भारतीय दर्शन - I<br>(Classical Indian Philosophy -I)<br>HPI-C102<br>प्राचीन भारतीय दर्शन - II<br>(Classical Indian Philosophy -II) | | | Language and Literature (4) | **HPI-S101**<br>**पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व विकास (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)**<br>**[Patanjal Yoga & Personality Developments (Theoretical & Practical)]** | Yogic Science/ Human Psychology | 22 |
| II | HPI-C201<br>प्राचीन पाश्चात्त्य दर्शन<br>(Classical Western Philosophy)<br>HPI- C202<br>आधुनिक पाश्चात्त्य दर्शन<br>(Modern Western Philosophy) | | | Environmental Science & Sustainable Development (4) | HPI-S201<br>**शास्त्रार्थ – सिद्धान्त एवं परम्परा (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)**<br>**[Shāstrārtha – Theory and Tradition (Theoretical & Practical)]** | Physical Education and Sports/ Human Psychology (2) | 22 |
| AWARD OF CERTIFICATE (after 1 year: 44 Credits) | | | | | | | |
| III | HPI-C301<br>भारतीय नीतिशास्त्र<br>(Indian Ethics)<br>HPI-C302<br>पाश्चात्त्य नीतिशास्त्र<br>(Western Ethics)<br>HPI-C303<br>नैतिक निर्णय निर्माण<br>(Ethical Decision Making ) | | HPI-G301<br>सार्वजनिक क्षेत्र में नीतिशास्त्र<br>(Ethics in Public Domain) | | | IT Skills, Data Analysis (2) | 26 |
| IV | HPI-C401<br>भारतीय तर्कशास्त्र<br>(Indian Logic)<br>HPI-C402<br>पाश्चात्त्य तर्कशास्त्र<br>(Western Logic)<br>HPI-C403<br>विज्ञान का दर्शन<br>(Philosophy of Science) | | HPI – G401<br>प्रबन्धन का दर्शनशास्त्र<br>(Philosophy of Management ) | | | Science and Society (2) | 26 |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Award of Diploma (After 02 Years: 96 Credits) | | | | | | | |
| V | HPI-C501<br>वैदिक दर्शन (Vedic Philosophy)<br>HPI-C502<br>भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन (Scio & Political Philosophy ) | HPI-E501<br>धर्म दर्शन (***Philosophy of Religion***) **/**<br>HPI-E502<br>जैन दर्शन (Jainism) /<br>HPI-E502<br>बौद्ध दर्शन<br>HPI/ | HSA-G501<br>अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics) | | | Ethics & Culture/BKT (2) | 24 |
| VI | HPI-C601<br>वेदान्त दर्शन (Vedanta Philosophy)<br>HPI-C602<br>पाश्चात्य सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन (Western Socio & Political Philosophy) | HPI-E601<br>बी. आर. अम्बेडकर के दार्शनिक विचार (Philosophical Thought of B.R. Ambedkar)/<br>HPI-E602 जैव - नीतिशास्त्र (Bioethics)/<br>HPI-E603 प्रौद्योगिकी एवं नीतिशास्त्र (Technology and Ethics) | HPI-G601<br>दार्शनिक विधियाँ (Philosophical Method) | | | Dissertation on Major (6) | 24 |
| Awards of Bachelor of Arts (Hons) in Discipline (3 Years) After 3 Years: 148 Credits) | | | | | | | |
| VII | ***HPI-C701*** समकालीन भारतीय दर्शन ***(Contemporary Indian Philosophy)***<br>***HPI-C702*** समकालीन पाश्चात्य दर्शन ***(Contemporary Western Philosophy)*** | HPI-E701<br>स्वामी दयानन्द का दर्शन (Philosophy of Swami Dayananda )<br>HPI-E702<br>महर्षि मनु का दर्शन (Philosophy of Maharshi Manu) | | | | Internship (12) | 24 |
| VIII | ***HPI-C801*** भारतीय भाषा दर्शन ***(Indian Language Philosophy)***<br>***HPI-C802*** पाश्चात्य विश्लेषणात्मक दर्शन ***(Western Analytical Philosophy)*** | HPI-E801<br>सौन्दर्यशास्त्र (Aesthetic )<br>HPI – E802<br>नारीवाद (Feminism) | | | | Thesis (12) | 24 |
| Award of Bachelor of in arts (Hons) in Discipline with Research (after 4 Years: 196 Credits) | | | | | | | |

## दर्शनशास्त्र विभाग, गुरुकुल काङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

## चार वर्षीय स्नातक स्तर (B.A. - Hons) पाठ्यक्रम

### कार्यक्रम अध्ययन के परिणाम [Programme Outcomes (POs)]

| Pos | Attributes |
|---|---|
| **PO 1** | दर्शन के मूलभूत तत्त्वों को समझ सकेंगे। |
| **PO 2** | दार्शनिक अवधारणाओं का विश्लेषण एवं समीक्षा कर सकेंगे। |
| **PO 3** | ज्ञान के स्वरूप, प्रामाणिकता व ज्ञान के सीमाओं को समझने में निपुण हो सकेंगे। |
| **PO 4** | किसी तत्त्व से सम्बन्धित संज्ञानात्मक दावों की परीक्षा कर सकेंगे। |
| **PO 5** | जगत् के मूलतत्त्व के सम्बन्ध में दार्शनिक सिद्धान्तों को समझ सकेंगे। |
| **PO 6** | समुचित विधि से तर्क कर सकेंगे। |
| **PO 7** | यथार्थ एवं अयथार्थ में मूलतः भेद को भी स्पष्ट कर सकेंगे। |
| **PO 8** | किसी नियम आदि की तार्किक वैधता की जाँच कर सकेंगे। |
| **PO 9** | तार्किक अनुमान व तार्किक सामान्यों की स्थापना कर सकेंगे। |
| **PO 10** | भारतीय व पाश्चात्त्य नैतिक सिद्धान्तों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे। |
| **PO 11** | शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित, अच्छा-बुरा, सद्गुण-दुर्गुण आदि नैतिक प्रत्ययों का यथेष्ट अर्थ प्रस्तुत कर पायेंगे। |
| **PO 12** | न्याय, स्वतन्त्रता, सम्प्रभुता, अधिकार, कर्त्तव्य, दण्ड आदि सामाजिक-राजनैतिक प्रत्ययों का समीक्षात्मक मूल्याङ्कन कर सकेंगे। |
| **PO 13** | नैतिक निर्णयों का निर्माण कर सकेंगे। |
| **PO 14** | जीवन और जगत् को उसकी समग्रता में समझने में निपुण हो सकेंगे। |
| **PO 15** | यौगिक क्रियाओं के द्वारा मन व शरीर को स्वस्थ रख सकेंगे। |

## कार्यक्रम अध्ययन के विशिष्ट परिणाम [Programme Specific Outcomes (PSOs)]

| S.N. | Attributes |
|---|---|
| PSO 1 | मानवीय समाज, समूह अथवा संस्थानों के सञ्चालन हेतु ऐसे नियमों व कानूनों का निर्माण कर सकेंगे, जिनमें न्याय, समता, स्वतन्त्रता, अधिकार व कर्त्तव्य आदि नैतिक मूल्यों का समावेश हो। |
| PSO 2 | किसी कथन के सत्यता की तार्किक परीक्षा करने में निपुण हो सकेंगे। |
| PSO 3 | सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन में उत्पन्न होने वाले नैतिक द्वन्द्वों का समुचित समाधान कर सकेंगे। |
| PSO 4 | विविध रोजगार-परक, प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में मूल्याङ्कन किये जाने वाले बौद्धिक, तार्किक एवं नैतिक दक्षता को प्राप्त कर सकेंगे। |
| PSO 5 | तार्किक अथवा युक्तिसंगत सम्भाषण कर सकेंगे। |
| PSO 6 | व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन का प्रबन्धन करने में निपुण हो सकेंगे। |
| PSO 7 | विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि ( Emotional Intelligence) परिष्कृत होगी। |
| PSO 8 | दार्शनिक अनुसंधान की क्रिया कर सकेंगे। |
| PSO 9 | विपरीत अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनःस्थिति को शान्त व स्थिर रख सकेंगे। |

**सत्र - प्रथम**

**Semester – I**

**DSC**

**Paper Code - HPI-C101**

**प्राचीन भारतीय दर्शन -1**

# Classical Indian Philosophy

**पूर्णाङ्क 100**

**सत्रान्त परीक्षा : 70**

**सत्रीय मूल्याङ्कन : 30**

**क्रेडिट 06**

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य -**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को दर्शनशास्त्र विषय के विविध आयामों से परिचित कराना है। इसका ध्येय विद्यार्थियों में दर्शनशास्त्रीय दृष्टिकोण को विकसित करना है, जिससे छात्र जीवन एवं जगत् से सम्बन्धित ज्ञानमीमांसीय, तत्त्वमीमांसीय अथवा नैतिक मूल्य आदि विविध विषयों के सम्बन्ध में एक स्पष्ट समझ बना सकें तथा दर्शनशास्त्र एवं अन्य शास्त्रों के मध्य वर्णित विशिष्ट सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय मनीषियों द्वारा विचार किये गये प्रमुख दार्शनिक तत्त्वों को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय दार्शनिक विचारों से भलीभाँति अवगत कराना है। इन विशिष्टताओं के साथ यह पाठ्यक्रम छात्रों को दर्शनशास्त्र विषय के सम्बन्ध में सशक्त चिन्तन-शक्ति प्रदान करेगा।

**प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि**

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 20 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 70 अङ्क की होगी। प्रश्नपत्र क तथा ख दो खण्डों में विभक्त होगा। खण्ड क में 10 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से 05 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150 शब्दों में अपेक्षित होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 06 अङ्क का होगा। खण्ड ख में 08 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें 04 प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित होगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्क का होगा।

## Course Contents (पाठ्य – विषय)

**इकाई I**

- दर्शनशास्त्र का अर्थ, स्वरूप, विषय-वस्तु (दर्शनशास्त्र की प्रमुख शाखाएं – ज्ञानमीमांसा - तर्कशास्त्र, तत्त्वमीमांसा एवं नीतिशास्त्र) दर्शनशास्त्र का महत्त्व, दर्शनशास्त्र - सभी शास्त्रों के उत्पत्ति के कारण के रूप में। फिलॉसॉफी एवं दर्शन के मध्य अन्तर।
- भारतीय दर्शन के लक्षण, वर्गीकरण – आस्तिक एवं नास्तिक सम्प्रदाय।

**इकाई II**

- वेद एवं उपनिषदों का परिचय।
- उपनिषद् - ब्रह्म, आत्मा एवं जगत्, पञ्चकोश, आत्मा की चार अवस्थाएं।
- भगवद्गीता - ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग।

**इकाई III**

- चार्वाक् (लोकायत) - ज्ञानमीमांसा, तत्त्वमीमांसा एवं नीतिशास्त्र।

**इकाई IV**

- जैन दर्शन - ज्ञानमीमांसा, सत् की प्रकृति और वर्गीकरण, नय सिद्धान्त, स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, कर्म, बन्धन एवं मुक्ति का सिद्धान्त।

**इकाई V**

- बौद्ध धर्म - ज्ञानमीमांसा, चार आर्य सत्य, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनात्मवाद, क्षणिकवाद, निर्वाण।

**Unit I**

- Meaning, Nature and Subject-Matter of Philosophy (Major Branches of Philosophy – Epistemology - Logic, Metaphysics, Ethics), Importance of Philosophy, Philosophy as a mother of all sciences, Distinction between Darśana and Philosophy.
- Characteristics & Classification of Indian Philosophy – Āstika & Nāstika,

**Unit II**

- Introduction to the Vedas & Upanishadas.
- Upanishad - Brahaman, Ātman & Jagat, Panchkosh, Four stages of Ātman
- Bhagavadgītā - Jñānayoga, Karmayoga and Bhaktiyoga.

**Unit III**

- Cārvāk (Lokāyata) - Metaphysics, Epistemology and Ethics.

**Unit IV**

- Jainism: Epistemology, Nature and Classification of Reality, Theory of Naya, Syādavāda, Anekāntavāda. Theory of Karma, Bondage and Liberation.

**Unit V**

- Buddhism - Epistemology, Four Noble Truths, *Pratītyasamutpād*a, Anātmavāda (No-soul theory), Theory of Momentariness, Nirvāna.

## पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcomes)

CO1 - दर्शनशास्त्र के स्वरूप, उसके विषय-वस्तुओं एवं उनका महत्त्व तथा अन्य शास्त्रों से दर्शन के सम्बन्ध को समझ सकेंगे।

CO2- ज्ञानमीमांसीय, तर्कशास्त्रीय, तत्त्वमीमांसीय व नीतिमीमांसीय आदि दार्शनिक विषय-वस्तु का वर्गीकरण एवं व्याख्या कर सकेंगे।

CO3 - गीता, चार्वाक्, जैन व बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे ।

CO4- जगत् के मूलतत्त्व अथवा सत् तत्त्व के स्वरूप तथा जीव, जगत् एवं ईश्वर के सम्बन्ध में वैदिक, औपनिषदिक, गीता एवं भारतीय दर्शन के नास्तिक सम्प्रदायों के अन्वेषणों को भलीभाँति समझकर उनकी व्याख्या एवं समीक्षा कर सकेंगे।

## सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):


- Chatterjee, S - Datta. D.M (1984) *An Introduction to Indian Philosophy*, 8th ed., University of Calcutta, (Eng-Hindi)
- Dasgupta, S.N (2004), *A History of Indian Philosophy, vol.1*, Delhi: MLBD Publishers.
- Datta, D.M., (1972) *The Six Ways of Knowing*, University of Calcutta.
- Hiriyanna, M. (1994) *Outlines of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
- Hiriyanna, M. (2015) *The Essentials of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
- Mohanty, J.N. (1992) *Reason and Tradition in Indian Thought,* Oxford: Clarendon Press. (2002)
- Organ, T. W. (1964) *The Self in Indian Philosophy*. London: Mounton - Co.
- Radhakrishnan, S. (1929) *Indian Philosophy, Volume 1*. Muirhead Library of Philosophy (2nd ed.) London: George Allen and Unwin Ltd.
- Radhakrishnan, S. and Moore, C. A. (1967) *A Sourcebook in Indian Philosophy*, Princeton.
- Raju, P.T. (1985) *Structural Depths of Indian Thought,* Albany, NY: State University of New York Press.
- Sharma, C.D (2000), *A Critical Survey of Indian Philosophy*, Motilal Banarasidas,
- वेदालंकार, जयदेव, *भारतीय दर्शन की समस्याएं,* प्राच्यविद्या शोध प्रकाशन, हरिद्वार।


## Mapping of course outcomes with programme outcomes & programme specific outcomes

**Point Scale**

| Scale | Point |
|---|---|
| Below 20% similarity between PO and CO | 1 |
| 20% to 50% Similarity between PO and CO | 2 |
| Above 50% Similarity between PO and CO | 3 |

| | Po 1 | P O 2 | PO 3 | P0 4 | PO 5 | PO 6 | PO 7 | PO 8 | PO 9 | PO 10 | PO 11 | PO 12 | PO 13 | PO 14 | PO 15 | PS O 1 | PSO 2 | PS O 3 | PS O 4 | PSO 5 | PS O 6 | PS O 7 | PS O 8 | PS O 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | 3 | 3 | | | | | | | | | | | | 2 | | | | | 1 | | | | 1 | |
| CO2 | 3 | 3 | | | | | | | | | | | | 2 | | | | | 1 | | | | 1 | |
| CO3 | 1 | 2 | 3 | 2 | | 1 | 3 | 3 | 2 | | | | | | | | 2 | | 2 | | | | 2 | |
| CO4 | 1 | 2 | | | 3 | | 2 | | | | | | | 3 | 2 | | | | 2 | | | | 2 | |

**Note: 1-Low, 2-Medium, 3-High**

**DSC**
**Paper Code HPI-C102**

**प्राचीन भारतीय दर्शन - II**

# Classical Indian Philosophy – II

**पूर्णाङ्क :100**
**सत्रान्त परीक्षा : 70**
**सत्रीय मूल्याङ्कन : 30**
**क्रेडिट : 06**

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य -**

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय षड्दर्शन में वर्णित ज्ञानमीमांसीय एवं तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्तों का ज्ञान प्रदान करना है, जिससे कि वे ज्ञान व जीवन जगत् से सम्बन्धित प्राचीन भारतीय दार्शनिकों के मौलिक विचारों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकें। इस पाठ्यक्रम के सम्यक् अध्ययन से ज्ञान व तत्त्व के सम्बन्ध में प्राचीन भारतीय महर्षियों ने जो दिव्य अन्वेषण किया है, उसका लाभ प्राप्त कर विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में उत्पन्न होने वाली दार्शनिक समस्याओं का निवारण करने में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे। ज्ञात है कि भारतीय दर्शन त्रिविध दुःखों के नाश के उपायों की अद्भुत मीमांसा प्रस्तुत करते हैं, जिनका लाभ विद्यार्थी उठा सकें यह ध्येय भी इस पाठ्यक्रम के रचना में सन्निहित है।

**प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि**

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 20 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 70 अङ्क की होगी। प्रश्नपत्र क तथा ख दो खण्डों में विभक्त होगा। खण्ड क में 10 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से 05 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150 शब्दों में अपेक्षित होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 06 अङ्क का होगा। खण्ड ख में 08 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें 04 प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित होगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्क का होगा।

## Course Contents (पाठ्य – विषय)

### इकाई I

- सांख्य :- पुरुष, प्रकृति, मुक्ति, विकासवाद, सत्कार्यवाद।
- योग :- चित्त, चित्तवृत्ति, चित्तभूमियाँ, अष्टाङ्ग-योग, ईश्वर।

### इकाई II

- न्याय :- प्रमा, अप्रमा एवं प्रमाण। प्रत्यक्ष एवं उसके प्रकार - निर्विकल्पक, सविकल्पक लौकिक, अलौकिक एवं योगज। अनुमान, व्याप्ति, परामर्श, अनुमान के प्रकार - पूर्ववत्, शेषवत्, सामान्यतोदृष्ट , केवलान्वयि, केवलव्यतिरेकि, अन्वय-व्यतिरेकि, स्वार्थानुमान, परार्थानुमान। उपमान, शब्द, ईश्वर के अस्तित्व में प्रमाण।

### इकाई III

- वैशेषिक :- ज्ञानमीमांसा, पदार्थ - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय एवं अभाव, परमाणुवाद।

**इकाई IV**

- मीमांसा (प्रभाकर एवं भट्ट) :- ज्ञानमीमांसा, धर्म, अपूर्व।
- अद्वैत वेदान्त :- ब्रह्म, माया, मुक्ति, विवर्तवाद।
- विशिष्टाद्वैत :- ब्रह्म, माया, मुक्ति, ब्रह्म परिणामवाद।

**Unit I**

- Sāṅkhya :- Puruşa, Prakiti, Mukti, Theory of Evolution, Satkāryavāda.
- Yoga :- Citta, Cittavritti, Cittabhumiyan, Eight-fold path (Astāng Yoga), God.

**Unit II**

- Nyāya :- Pramā, Apramā & Pramānas. Pratyaksa & its types – Nirvikalpaka, Savikalpaka, Laukika, Alaukika & Yogaja. Anumān, Vyāpti, Parāmarsha, Classification of Anumāna - Purvavat, Sheshavat, Samanyatodrista, Kevalanvayi, Kevalavyatriki, Anvayavyatireki, Svārthānumān, Parārthānumān, Upman, Shabda, Proofs for the Existence of God.

**Unit II**

- Vaiśeşika :- Epistemology, Padārthas - Dravya, Guna, Karma, Samanya, visesa, Samavaya and Abhāva, Atomism.

**Unit IV**

- Mīmāmsā (Prabhākar & Bhatta) :- Epistemology, Dharma, Apūrva.
- Advaita Vedānta :- Brahman, Māyā, Mukti, Vivartavad.
- Viśişţādvaita :- Brahman, Māyā, Mukti, Brahman Pariamvad.

---

## पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)

CO1 – इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी भारतीय षड्दर्शन के ज्ञानमीमांसीय एवं तार्किक सिद्धान्तों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे। यह ज्ञान उनको ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान के स्रोत, ज्ञान की प्रामाणिकता, यथार्थ ज्ञान - अयथार्थ ज्ञान आदि अवधारणाओं की समीक्षात्मक व्याख्या करने में सहायता प्रदान करेगा।

CO2 - षड्दर्शन के तत्त्वमीमांसीय विचारों को भलीभाँति समझ सकेंगे। यह समझ विद्यार्थियों को जीवन जगत् के मूल अथवा परम तत्त्व, आत्मा, जगत् एवं ईश्वर आदि के सम्बन्ध में एक दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने में सहायता प्रदान करेगी।

CO3 – षड्दर्शन में वर्णित मोक्ष प्राप्ति के उपायों का ज्ञान प्राप्त होगा। यह ज्ञान उन्हें जीवन के आदर्श को समझने और उसको प्राप्त करने में सहायता प्रदान करेगा।

CO4 – योग-दर्शन की चित्तभूमियों एवं चित्तवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे तथा उनके उपाय हेतु योग विधियों का प्रयोग कर सकेंगे।

## सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):


- Chatterjee, S - Datta. D.M (1984) *An Introduction to Indian Philosophy*, 8th ed., University of Calcutta, (Eng-Hindi)
- Datta, D.M., (1972) *The Six Ways of Knowing*, University of Calcutta.
- Hiriyanna, M. (1994) *Outlines of Indian Philosophy*, Delhi: MLBD Publishers.
- Mohanty, J.N. (1992) *Reason and Tradition in Indian Thought,* Oxford: Clarendon Press.
- Mohanty, J.N. (2002) *Essays on Indian Philosophy*, (2nd ed) ed. by P. Bilimoria, UK: Oxford University Press.
- Murthi, K. S. (1959) *Revelation and Reason in Advaita Vedanta*. Waltair: Andhra University Press.
- Organ, T. W. (1964) *The Self in Indian Philosophy*. London: Mouton - Co.
- Pandey, S. L. (1983) *Pre-Samkara Advaita Philosophy*, (2nd ed.) Allahabad: Darsan Peeth.
- Radhakrishnan, S. (1929) *Indian Philosophy, Volume 1*. Muirhead Library of Philosophy (2nd ed.) London: George Allen and Unwin Ltd.
- Radhakrishnan, S. and Moore, C. A. (1967) *A Sourcebook in Indian Philosophy*, Princeton.
- Raju, P.T. (1985) *Structural Depths of Indian Thought,* Albany, NY: State University of New York Press.
- Sharma, C.D (2000), *A Critical Survey of Indian Philosophy*, Motilal Banarasidas,
- वेदालंकार, जयदेव, भारतीय दर्शन की समस्याएं, प्राच्यविद्या शोध प्रकाशन, हरिद्वार।


## Mapping of course outcomes with programme outcomes & programme specific outcomes

| Cos | Po 1 | PO 2 | PO3 | P04 | PO5 | PO6 | PO7 | PO8 | PO9 | PO10 | PO11 | PO 12 | PO 13 | PO 14 | PO 15 | PS O1 | PS O2 | PS O3 | PS O4 | PS O5 | PS O6 | PS O7 | PS O8 | PS O 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | 1 | 3 | 3 | 3 | | 3 | 3 | 3 | 3 | | | | | | | | | | 1 | | | | 1 | |
| CO2 | 1 | 3 | | | 3 | | 3 | | | | | | | 3 | | | | | 2 | | | 2 | 2 | |
| CO3 | 1 | 3 | | 2 | 3 | | | | | | | | | 3 | 3 | | | 1 | 1 | | 3 | 3 | 1 | 3 |
| CO4 | 1 | 3 | | | 2 | | | | | | | | | 3 | 3 | | | 1 | 2 | | 3 | 3 | 1 | 3 |

| | | |
|---|---|---|
| **SEC** | **पातञ्जल योग एवं व्यक्तित्व** | **पूर्णाङ्क : 100** |
| **Paper Code HPI-S101** | **विकास (सैद्धान्तिक एवं** | **सत्रान्त परीक्षा : 70** |
| | **प्रयोगात्मक)** | **सत्रीय मूल्याङ्कन : 30** |
| | **Patanjal Yoga & Personality** | |
| | **Development (Theoretical &** | |
| | **Practical)** | |
| | | **क्रेडिट : 04** |

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य -**

इस पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय योग-विद्या से सम्बन्धित प्रमुख दार्शनिक अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को योग-विद्या की विशेषताओं एवं प्रमुख यौगिक क्रियाओं का ज्ञान कराना एवं यौगिक पद्धतियों से उनके व्यक्तित्व को परिष्कृत करना है, जिससे विद्यार्थी जीवन में उत्पन्न होने वाली विषम परिस्थितियों में भी स्वयं को संतुलित व निरोगी बनाएं रखने में प्रवीण हो सकेंगे।

**प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि -**

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 20 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 असाइनमेण्ट के होंगे अथवा 30 अङ्क प्रयोगात्मक परीक्षा अथवा 30 मौखिक परीक्षा। सत्रान्त परीक्षा 70 अङ्क की होगी। प्रश्नपत्र क तथा ख दो खण्डों में विभक्त होगा। खण्ड क में 10 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से 05 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150 शब्दों में अपेक्षित होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 06 अङ्क का होगा। खण्ड ख में 08 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें 04 प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित होगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्क का होगा।

## Course Contents (पाठ्य – विषय)

**इकाई - I**

- योग – परिभाषा, स्वरूप एवं महत्त्व।
- योग के प्रमुख प्रकार– अष्टाङ्ग-योग तथा क्रियायोग।

**इकाई - II**

- व्यक्तित्व एवं व्यक्तित्व विकास की अवधारणा एवं प्रमुख परिभाषाएं।
- व्यक्तित्व विकास के प्रमुख आयाम एवं उसे प्रभावित करने वाले मुख्य कारक।

**इकाई – III व्यक्तित्व विकास में योग की भूमिका - I**

- सन्तुलित शारीरिक व्यक्तित्व विकास – आसन एवं प्राणायाम।
- संवेगात्मक स्थिरता – क्रिया योग की भूमिका।

- सामाजिक समायोजन में सहायक – मैत्री, करुणा, मुदिता एवं उपेक्षा (चित्त प्रसाद के साधन)

**इकाई – IV व्यक्तित्व विकास में योग की भूमिका - II**

- नैतिक व्यक्तित्व का विकास – यम एवं नियम।
- आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकास – धारणा एवं ध्यान।
- बौद्धिक व्यक्तित्व का विकास – प्राणायाम एवं ध्यान।

इकाई – **V सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक**

- आसन का अभ्यास।
- प्राणायाम का अभ्यास।
- धारणा का अभ्यास।
- ध्यान का अभ्यास।

**UNIT – I**

- Yoga- Definition, Nature and Importance.
- Main Types of Yoga – Astang-yoga & Kriyayoga.

**UNIT– II**

- Concept of Personality and Personality Development- Main Definitions.
- Main Dimensions of personality Development, main effective factors.

**UNIT – III Role of Yoga in personality Development - I**

- Development of Balanced physical personality – Aasana and Pranayama.
- Emotional stability - Role of kriya Yoga.
- Helpful in social adjustment- Maitri, Karuna, Mudita and Upeksha (the means of Citta Prasada)ए

**UNIT – IV Role of Yoga in personality Development – II**

- Development of moral Personality-Yama and Niyama.
- Development of spiritual Personality – Dharana and Dhyan.
- Development of rational personality – Pranayama and Dhyan.

**UNIT – V Theoretical & Practical**

- Practice of Asana.
- Practice of Pranayama.
- Practice of Dharana.
- Practice of Dhyana (Meditation).

**पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)**

**CO1** – इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी योग के अवधारणा को स्पष्टता पूर्वक समझ सेकेंगे।

**CO2** – योग के प्रमुख प्रकारों में अन्तर कर सकेंगे।

**CO3 -** यौगिक क्रिया करके मन को शान्त व स्थिर तथा शरीर को स्वस्थ बना सकेंगे ।

**CO4** – यौगिक क्रियाओं से व्यक्तित्व को सकारात्मक दिशा में विकसित कर सकेंगे।

**सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings)**:


1. Sachdeva, I.P. : Yoga and Depth Psychology
2. पातञ्जल योगसूत्र - व्यासभाष्य
3. सिंह, रामहर्ष (1999). *योग एवं यौगिक चिकित्सा*. चौखम्बा संस्कृति प्रतिष्ठान, दिल्ली।
4. शास्त्री, विजयपाल, (2019). *योग विज्ञान प्रदीपिका*. सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. परिव्राजक, सत्यवती (2018). *योगदर्शनम्*. वानप्रस्थ साधक आश्रम,
6. योगेन्द्रजीत (1982). *विकासात्मक मनोविज्ञान*. विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
7. भट्ट, कविता (2015). योग दर्शन में प्रत्याहार द्वारा मनोचिकित्सा. किताब महल, इलाहाबाद।
8. महाप्रज्ञ, युवाचार्य (1992). किसने कहाँ मन चंचल है. तुलसी अध्यात्मक नीडम् जैन विश्व भारती, राजस्थान।
9. सिंह, अरूण कुमार **&** सिंह, आशीष कुमार (2002). व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, नरेन्द्र प्रकाश जैन, दिल्ली।


## Mapping of course outcomes with programme outcomes & programme specific outcomes

| Cos | Po 1 | PO 2 | PO 3 | PO 4 | PO 5 | PO 6 | PO 7 | PO 8 | PO 9 | PO 10 | PO 11 | PO 12 | PO 13 | PO 14 | PO 15 | PS O 1 | PS O 2 | PS O 3 | PS O 4 | PS O 5 | PS O 6 | PS O 7 | PS O 8 | PS O 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | 1 | 3 | | | | | | | | 2 | | | | 1 | 3 | | | | 2 | | 3 | 2 | | 3 |
| CO2 | | 3 | | | | | | | | 2 | | | | | 3 | | | | 2 | | 2 | 2 | | 3 |
| CO3 | | | | | | | | | | | | | | 1 | 3 | | | | 1 | | 2 | 2 | 1 | 3 |
| CO4 | | | | | | | | | | 2 | | | | 1 | 3 | | | | 3 | | | 3 | 1 | 3 |

सत्र – द्वितीय

**Semester – II**

| | | |
|---|---|---|
| **DSC** | **प्राचीन पाश्चात्त्य दर्शन** | **पूर्णाङ्क :100** |
| **Paper Code HPI-C201** | **Classical Western Philosophy** | **सत्रान्त परीक्षा : 70** |
| | | **सत्रीय मूल्याङ्कन : 30** |
| | | **क्रेडिट : 06** |

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य -**

इस पाठ्यक्रम में प्राचीन पाश्चात्त्य दार्शनिकों द्वारा विचारे गये प्रमुख दार्शनिक अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों को पाश्चात्त्य दर्शनशास्त्र के विशेषताओं एवं प्रमुख सिद्धान्तों का ज्ञान कराना है, जिससे विद्यार्थी ज्ञान व मूलतत्त्व से सम्बन्धित दार्शनिक चिन्तन में प्रवीण हो सके।

**प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि -**

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 20 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 70 अङ्क की होगी। प्रश्नपत्र क तथा ख दो खण्डों में विभक्त होगा। खण्ड क में 10 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से 05 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150 शब्दों में अपेक्षित होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 06 अङ्क का होगा। खण्ड ख में 08 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें 04 प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित होगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्क का होगा।

## Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई-I

- ग्रीक दर्शन की उत्पत्ति और प्रकृति, पश्चिमी दर्शन की मुख्य विशेषताएं।
- माइलेशियन और पाइथागोरस सम्प्रदाय के परमतत्त्व का सिद्धान्त।

इकाई - II

- इलियाई सम्प्रदाय (पार्मेनाइडीज) का सत् सिद्धान्त, हेराक्लाइट्स का सम्भूति सिद्धान्त।
- एम्पेडाक्लीज़ के तत्त्व का सिद्धान्त।
- एनेक्ज़ागोरस के नाउस का सिद्धान्त।
- ल्यूसिप्पस और डेमोक्रिटस का परमाणु सिद्धान्त।

इकाई-III

- सोफिस्ट (प्रोटॉगोरस) के मुख्य सिद्धान्त – सापेक्षतावाद (मनुष्य सभी वस्तुओं का मानदण्ड है)

- सोक्रेटिक विधि।
- प्लेटो :- ज्ञान और धारणा, प्रत्यय का सिद्धान्त।
- अरस्तू :- प्रत्ययवाद की समीक्षा, द्रव्य एवं आकार, कार्य-कारण, वास्तविकता और सम्भाव्यता।

इकाई-IV

- सेंट ऑगस्टीन के ज्ञान का सिद्धान्त, अशुभ की समस्या।
- सेंट थॉमस एक्विनास का ईश्वर के सम्बन्ध में दृष्टिकोण, विश्वास एवं तर्क के मध्य अन्तर।

UNIT-I

- Origin and Nature of Greek Philosophy, chief characteristics of Western Philosophy.
- The Ultimate principles in Milesian and Pythagorean schools.

UNIT-II

- Being in Eleatic School (Parmenides), Heraclites' Doctrine of Becoming.
- Empedocles' Doctrine of Elements.
- Anaxagoras' Doctrine of Nous.
- Atomic theories of Leucippus and Democritus.

UNIT-III

- Main Principles of Sophists (Protagoras) - Relativism (Man is Measure of All Things).
- The Socratic Method.
- Plato :- Knowledge and Opinion, Ideas, Matter & form, Causation.
- Aristotle :- Matter and Form, Causality, Actuality and Potentiality.

UNIT-IV

- St. Augustine's Theory of Knowledge, the Problem of Evil,
- Thomas Aquinas's view of God, Distinction between faith and Reason.

**पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcomes)**

- CO1 – जगत् के मूलतत्त्व के सम्बन्ध में प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों के विचारों समझ सकेंगे एवं उनकी समीक्षात्मक व्याख्या कर सकेंगे।
- CO2 - ज्ञान के स्वरूप एवं स्रोत के सम्बन्ध में सोफिस्ट एवं प्लेटो के मतों, प्लेटो के ज्ञान व धारणा में अन्तर आदि प्रमुख प्राचीन पाश्चात्त्य दार्शनिक विचारधाराओं को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे।
- CO3 - सुकरात के संवाद विधि को समझ सकेंगे।
- CO4 – अशुभ की समस्या व ईश्वर के सम्बन्ध में पाश्चात्त्य दार्शनिक विचारों को स्पष्टता पूर्वक समझ सकेंगे।

**सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):**


1. Will Durant, A story of Philosophy, Simon & Schuster, 1926 & Pocket Books, New York, 2006

2. Bertrand Russell, A History of Western Philosophy, Union paper Backs, London, 1987

3. Frank Thilly, History of Western Philosophy, Central Book Depot, Allahabad, 1975

4. Daya Krishna Ed. Paschyatya Darshana Vol. 1, Rajasthan Hindi Granth Academy, 1988.

5. Stace, W.T.: A Critical History of Greek Philosophy Macmillan, New Delhi, 1985

6. Masih, Y. - A Critical History of Western Philosophy, Motilal Banarasidas, Delhi, 1994

7. C.D. Sharma: Paschatya Darshana, Motilal Banarasidas, 1992

9. Singh, B.N., : Paschatya Darshan, Students Friends and Co. Varanasi, 1973.


## Mapping of course outcomes with programme outcomes & programme specific outcomes

| Cos | Po1 | PO 2 | PO 3 | PO 4 | PO 5 | PO 6 | PO 7 | PO 8 | PO 9 | PO 10 | PO 11 | PO 12 | PO 13 | PO 14 | PO 15 | PS O 1 | PS O 2 | PS O 3 | PS O 4 | PS O 5 | PS O 6 | PS O 7 | PS O 8 | PS O 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | 3 | 3 | | | 3 | | 2 | | | | | | | 3 | | | | | 2 | | | | 1 | |
| CO2 | 3 | 3 | 3 | 2 | 1 | | 3 | | | | | | | 2 | | | 2 | | 2 | | | | 2 | |
| CO3 | 3 | 3 | | | 2 | 1 | 1 | 1 | | 1 | | | | | | | 2 | | 1 | 3 | | | 3 | |
| CO4 | 3 | 3 | | | 3 | | | | | | | | | | | | | | | | | | 1 | |

**DSC**
**Paper Code HPI-C202**

# आधुनिक पाश्चात्त्य दर्शन
# Modern Western Philosophy

**पूर्णाङ्क : 100**
**सत्रान्त परीक्षा : 70**
**सत्रीय मूल्याङ्कन : 30**
**क्रेडिट : 06**

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य -**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को पाश्चात्त्य दर्शन में वर्णित आधुनिक पाश्चात्त्य दार्शनिकों द्वारा विचारे गये ज्ञानमीमांसीय एवं तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्तों का ज्ञान कराना है, जिससे विद्यार्थी ज्ञान व मूलतत्त्व से सम्बन्धित दार्शनिक चिंतन में प्रवीण हो सकेंगे।

**प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि-**

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 20 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 70 अङ्क की होगी। प्रश्नपत्र क तथा ख दो खण्डों में विभक्त होगा। खण्ड क में 10 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से 05 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150 शब्दों में अपेक्षित होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 06 अङ्क का होगा। खण्ड ख में 08 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें 04 प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित होगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्क का होगा।

## Course Contents (पाठ्य – विषय)

### इकाई-I **बुद्धिवाद**

- डेकार्ट :- दर्शन की समस्या, ज्ञानमीमांसा, सन्देह की विधि, *'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ'*, द्रव्य की अवधारणा, ईश्वर के अस्तित्व में प्रमाण, मन- शरीर की समस्या।
- स्पिनोज़ा :- ज्ञानमीमांसा, द्रव्य की अवधारणा, गुण एवं पर्याय, ईश्वर एवं सर्वेश्वरवाद।
- लाइबनिज़ :- ज्ञानमीमांसा, चिदणु का सिद्धान्त, पूर्व-स्थापित सामञ्जस्य।

### इकाई-II **अनुभववाद**

- लॉक :- जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन, ज्ञान का सिद्धान्त, द्रव्य, प्राथमिक एवं गौण गुण।
- बर्कले :- ज्ञानमीमांसा, भौतिकवाद की आलोचना, *'सत्ता दृश्यता है'*, व्यक्तिपरक आदर्शवाद।
- ह्यूम :- अनुभववाद की परिणति, आध्यात्मिक तत्त्वों एवं कारणतावाद का खण्डन, सन्देहवाद।

### इकाई-III **समीक्षावाद**

- कान्ट :- बुद्धिवाद और अनुभववाद की समीक्षा,
- संश्लेषणात्मक प्रागानुभविक निर्णय, बुद्धि की कोटियाँ

- देश और काल,
- प्रपञ्च एवं परमार्थ (फेनोमिना एवं नोमिना)।

इकाई-IV **प्रत्ययवाद**

- हेगेल :- द्वन्द्वात्मक विधि, निरपेक्ष प्रत्ययवाद ।

UNIT-I **Rationalism**

- Descartes :- The Problem of Descartes Philosophy, Epistemology, Method of doubt, *Cogito Ergo sum*, concept of substance, Proofs for the Existence of God, Mind- Body Problem.
- Spinoza :- Epistemology, Refutation of Descartes conception of substance, concept of substance, attribute and mode, God and Pantheism.
- Leibniz :- Epistemology, Theory of Monads and Pre-established Harmony.

UNIT-IV **Empiricism**

- John Locke :- Refutation of Innate ideas, Theory of Knowledge, Substance, Primary and Secondary Qualities.
- George Berkeley :- Epistemology, Criticism of Materialism, Esse Est Percipi and Subjective Idealism.
- David Hume :- Culmination of Empiricism, Refutation of Metaphysical entities and Causality, Scepticism.

UNIT-V **Criticism**

- Immanual Kant's Reconciliation of Rationalism and Empiricism.
- Synthetic A-priory Judgement, Categories of Reason.
- Space and Time.
- Phenomena and Noumena.

UNIT-IV **Idealism**

- Hegel: Dialectic Method, Absolute Idealism.

**पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcomes)**

- CO1- पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के ज्ञानमीमांसा सम्बन्धी बुद्धिवादी, अनुभववादी, समीक्षावादी एवं प्रत्ययवादी सिद्धान्तों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। यह पाठ्यक्रम ज्ञान के स्वरूप, स्रोत, एवं प्रमाणीकरण को स्पष्ट करने हेतु विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करेगा।
- CO2- आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिकों के तत्त्वमीमांसा सम्बन्धी विचारों को समझ सकेंगे। यह समझ विद्यार्थियों को जीवन और जगत् के मूलतत्त्व को समझने में सहायता प्रदान करेगा।

**सहायक ग्रन्थ (Recommended Readings):**


1. Will Durant, A story of Philosophy, Simon & Schuster, 1926 & Pocket Books, New York, 2006

2. Bertrand Russell, A History of Western Philosophy, Union paper Backs, London, 1987

3. Frank Thilly, History of Western Philosophy, Central Book Depot, Allahabad, 1975

4. Daya Krishna Ed. Paschyatya Darshana Vol. 1-2, Rajasthan Hindi Granth Academy, 1988.

5. Stace, W.T.: A Critical History of Greek Philosophy Macmillan, New Delhi, 1985

6. Masih, Y. - A Critical History of Western Philosophy, Motilal Banarasidas, Delhi, 1994

7. C.D.Sharma: Paschatya Darshana, Motilal Banarasidas, 1992

8. Srivastava, Jagdisha Sahai: Adhunik Pascatya Darshana ka Vaijnanika Itihasa, Pustak Sthan, Gorakhpur, 1973.

9. Singh, B.N., : Paschatya Darshan, Students Friends and Co. Varanasi, 1973.


## Mapping of course outcomes with programme outcomes & programme specific outcomes

| Cos | Po1 | PO 2 | PO 3 | P0 4 | PO 5 | PO 6 | PO 7 | PO 8 | PO 9 | PO 10 | PO 11 | PO 12 | PO 13 | PO 14 | PO 15 | PS O 1 | PS O 2 | PS O 3 | PS O 4 | PS O 5 | PS O 6 | PS O 7 | PS O 8 | PS O 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | 3 | 3 | 3 | 3 | | 1 | 1 | | | | | | | | | | | | 2 | | | 1 | 1 | |
| CO2 | 3 | 3 | | | 3 | | 2 | | | | | | | 3 | | | | | 2 | | | 1 | 1 | |

| | | |
|---|---|---|
| **SEC**<br>**Paper Code HPI-S201** | **शास्त्रार्थ – सिद्धान्त एवं परम्परा (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)**<br>**Shāstrārtha – Theory and Tradition (Theoretical & Practical)** | **पूर्णाङ्क :100**<br>**सत्रान्त परीक्षा : 70**<br>**सत्रीय मूल्याङ्कन : 30**<br><br>**क्रेडिट : 04** |

**पाठ्यक्रम का उद्देश्य -**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय दार्शनिक वाङ्मय में वर्णित शास्त्रार्थ-विद्या के सिद्धान्त एवं शास्त्रार्थ की परम्पराओं का सम्यक् ज्ञान प्रदान कराना है, जिससे वे अपने शैक्षणिक व सामाजिक जीवन में शास्त्रार्थ की विधि के द्वारा किसी भी तथ्य की यथार्थता की सम्यक् चर्चा करने में दक्ष हो सकेंगे। यह पाठ्यक्रम अवश्य ही विद्यार्थियों के संवाद-कौशल को परिष्कृत करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

**प्रश्नपत्र मूल्याङ्कन विधि-**

प्रश्नपत्र का मूल्याङ्कन, आन्तरिक मूल्याङ्कन तथा सत्रान्त परीक्षा के आधार पर होगा। आन्तरिक मूल्याङ्कन में 20 अङ्क लिखित परीक्षा, 05 अङ्क उपस्थिति तथा 05 असाइनमेण्ट के होंगे। सत्रान्त परीक्षा 70 अङ्क की होगी। प्रश्नपत्र क तथा ख दो खण्डों में विभक्त होगा। खण्ड क में 10 लघूत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से 05 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150 शब्दों में अपेक्षित होगा। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 06 अङ्क का होगा। खण्ड ख में 08 दीर्घोत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें 04 प्रश्नों का उत्तर अपेक्षित होगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अङ्क का होगा।

## Course Contents (पाठ्य – विषय)

इकाई - I

- शास्त्रार्थ का अर्थ एवं महत्त्व।
- शास्त्रार्थ का मूल उद्देश्य एवं शास्त्रार्थ की परम्परा, प्रमुख रूप – लिखित एवं मौखिक।
- शास्त्रार्थ के मुख्य पक्ष – पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष।
- वादि, प्रतिवादि एवं निर्णायक।

इकाई – II **शास्त्रार्थ के प्रमुख तत्त्व**

- तिस्र कथा :- वाद, जल्प एवं वितण्डा।
- प्रमाण :– प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द।
- तर्क।

इकाई – III **शास्त्रार्थ के प्रमुख उद्देश्य**

- तत्त्वबोध।
- सत्य - असत्य और उचित - अनुचित का निर्णय।
- दार्शनिक, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार का साधन।

इकाई – IV **अन्य विधियों से तुलना**

- द्वन्द्व विधि, पैरोस्त्रोइका एवं सत्याग्रह।

इकाई – V **शास्त्रार्थ-परम्परा**

- प्राचीन भारतीय युग - उपनिषद् एवं सूत्र ग्रन्थ।
- मध्यकालीन - आचार्य शंकर एवं कुमारिल भट्ट।
- आधुनिक काल - स्वामी दयानन्द एवं उनके अनुयायी।

**Unit 1 :-**

1. Meaning and importance of Shastrartha,
2. Ultimate aim of Shastrartha and Tradition of Shastrartha, Main type - written and verbal,
3. Main aspects of Shastrartha-Purvpaksha, Uttarpaksha.
4. Vadi, Prativadi and Judge/Decision Maker.

**Unit 2 :** Main Elements of Shastrartha-

1. Tisrah Katha- Vada, Jalp and Vitanda.
2. Pramanas- Pratyaksha, Anumana, Upamana and Shabda.
3. Tarka .

**Unit-3 :** Main Purposes of Shastrartha -

1. Knowledge of reality.
2. The Judgement of Truth-False and Right-Wrong.
3. The Mean of Philosophical, Religious and Social Reformation.

**Unit- 4 :** Comparison to other Philosophical Methods -

Dialectic method, Perestroika and satyagraha.

**Unit- 5:** Tradition of Shastrartha-

1. Ancient Indian age - Upanishad and Sutra-Grantha

2. Middle Period - Acharya Shankar and Kumaril Bhatta
3. Modern Period - Swami Dayananda and his followers.

---

**पाठ्यक्रम - अध्ययन परिणाम (Course Outcome)**

**CO1** – शास्त्रार्थ विधि के भारतीय सिद्धान्तों एवं शास्त्रार्थ की प्राचीन, मध्यकालीन व आधुनिक परम्परा को समझ सकेंगे।

**CO2-** शास्त्रार्थ के प्रमुख तत्त्वों, उसके प्रकारों का वर्गीकरण कर एवं द्वन्द्वात्मक सहित अन्य विधाओं से इसके सम्बन्ध एवं भेद को स्पष्ट कर सकेंगे।

**CO3** – किसी तथ्य के वास्तविकता के अन्वेषण के सम्बन्ध में वैचारिक मंथन हेतु शास्त्रार्थ विधि का प्रयोग कर सकेंगे।

**सहायक ग्रन्थ ( Recommended Readings ) :**


1. न्यायसूत्र – वात्स्यायन भाष्य।
2. शास्त्री, उदयवीर – न्याय दर्शनम्।
3. एस. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन।
4. मिखाइल, गोर्बाच्येव, पेरेस्त्रोइका।
5. विद्यालंकार, सत्यकेतु – आर्यसमाज का इतिहास।
6. भारतीय, भवानीलाल – नवजागरण के पुरोधा।
7. आर्य, सोहनपाल सिंह, मार्क्स और ऋषि दयानन्द का समाज दर्शन – तुलनात्मक अध्ययन।
8. उपनिषद् अंक, कल्याण विशेषांक – गीता प्रेस गोरखपुर।


## Mapping of course outcomes with programme outcomes & programme specific outcomes

| Cos | Po 1 | PO 2 | PO 3 | P04 | PO 5 | PO 6 | PO 7 | PO 8 | PO 9 | PO 10 | PO 11 | PO 12 | PO 13 | PO 14 | PO 15 | PSO1 | PSO2 | PSO3 | PSO4 | PSO5 | PSO6 | PSO7 | PSO8 | PSO 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | 1 | 3 | 3 | 3 | 2 | 3 | 3 | 3 | 3 | | | | | 3 | | | 3 | | 2 | 3 | | | 1 | |
| CO2 | 1 | 3 | 3 | 3 | 2 | 3 | 3 | 3 | 3 | | | | | 3 | | | 3 | | 2 | 3 | | | 1 | |
| CO3 | 1 | 3 | 3 | 3 | 2 | 3 | 3 | 3 | 3 | | | | | 3 | | | 3 | | 2 | 3 | | | 1 | |